Vol 8, Issue 3, 2025 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2025.8.3.8145

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

बिहार के पटना जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रो में शैक्षिक रुचि का अध्ययन

अंजनी केशरी [1]

[1] शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, श्री सत्य साई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश

डॉ. धीरज शिंदे [2]

[2] शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, श्री सत्य साई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र बिहार के पटना जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रो में शैक्षिक रुचि का अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं व शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक रुचि को ज्ञात किया गया है। 300 छात्र व 300 छात्राओं को प्रतिदर्श लिया गया है, जिन पर शैक्षिक रुचि प्रपत्र का उपयोग किया गया है। इस प्रपत्र का उपयोग करके समंक एकत्रित किया गया है। समंक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया गया है। समंक विश्लेषणोंपरान्त पटना जिले के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं व शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

मुख्यशब्द– पटना जिला, माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक रुचि, शिक्षण पाठ्यक्रम, छात्र–छात्रा।

प्रस्तावना

माध्यमिक विद्यालय का स्तर विद्यार्थियों के शैक्षिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यही वह अवस्था है जहाँ बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश होता है और छात्रों के व्यक्तित्व, रुचियों, अभिरुचियों तथा भविष्य की दिशा का निर्धारण प्रारंभ होता है। इस स्तर पर शैक्षिक रुचि का अर्थ केवल पुस्तकों के अध्ययन या परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की इच्छा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सीखने की जिज्ञासा, ज्ञान अर्जन के प्रति उत्साह, कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी, प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति, स्व–अध्ययन की आदत तथा सीखने को जीवन से जोड़ने की क्षमता को भी सम्मिलित करती है। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में शैक्षिक रुचि का विकास अनेक कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी परिवेश, शिक्षक की भूमिका, पाठ्यक्रम की प्रकृति, शिक्षण विधियाँ, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, तकनीकी संसाधनों का उपयोग तथा सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रमुख हैं। यदि परिवार में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो, माता–पिता बच्चों की जिज्ञासाओं को प्रोत्साहित करें और सीखने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करें, तो छात्रों में शैक्षिक रुचि स्वाभाविक रूप से विकसित होती है। इसके विपरीत, यदि परिवार में शिक्षा को केवल औपचारिकता या दबाव के रूप में देखा जाए, तो छात्र शिक्षा से विमुख होने लगते हैं। विद्यालय का वातावरण भी छात्रों की शैक्षिक

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

रुचि को गहराई से प्रभावित करता है; अनुशासित, सुरक्षित, सहयोगात्मक और प्रेरणादायक वातावरण में छात्र न केवल सीखने में रुचि लेते हैं, बल्कि अपनी क्षमताओं को भी पहचान पाते हैं। शिक्षक इस प्रक्रिया के केंद्रीय स्तंभ होते हैं, क्योंकि शिक्षक की शिक्षण शैली, व्यवहार, संवेदनशीलता और नवाचार क्षमता छात्रों की रुचि को या तो जाग्रत कर सकती है या समाप्त भी कर सकती है। जब शिक्षक विषयवस्तु को जीवन से जोड़कर, उदाहरणों, प्रयोगों, चर्चा, परियोजना कार्य, समूह गतिविधियों और समस्या–समाधान विधियों के माध्यम से पढ़ाते हैं, तब छात्र विषय को बोझ नहीं बल्कि रोचक अनुभव के रूप में ग्रहण करते हैं। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम की संरचना भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है; यदि पाठ्यक्रम केवल तथ्यात्मक ज्ञान और रटने पर आधारित हो, तो छात्रों की रुचि शीघ्र ही कम हो जाती है, जबकि कौशल–आधारित, अनुभवात्मक, बहुविषयी और लचीला पाठ्यक्रम छात्रों को सक्रिय शिक्षार्थी बनाता है। आज के डिजिटल युग में तकनीकी संसाधनों जैसे स्मार्ट कक्षा, शैक्षिक ऐप्स, ऑनलाइन वीडियो, आभासी प्रयोगशालाएँ और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक रुचि को नए आयाम प्रदान किए हैं, क्योंकि तकनीक के माध्यम से सीखना अधिक दृश्यात्मक, संवादात्मक और आत्म–गति आधारित हो गया है। साथ ही, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे वाद–विवाद, निबंध लेखन, विज्ञान प्रदर्शनी, खेल, नाटक, संगीत और कला छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं और अप्रत्यक्ष रूप से उनकी शैक्षिक रुचि को भी सुदृढ़ करती हैं। किशोरावस्था में भावनात्मक उतार–चढ़ाव, पहचान का संकट और साथियों का प्रभाव भी छात्रों की शैक्षिक रुचि को प्रभावित करता है; यदि विद्यालय और शिक्षक छात्रों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझकर मार्गदर्शन प्रदान करें, तो छात्र शिक्षा को आत्म–विकास का साधन मानने लगते हैं। इसके अतिरिक्त, मूल्यांकन प्रणाली भी शैक्षिक रुचि के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है; केवल अंकों और परीक्षाओं पर आधारित मूल्यांकन छात्रों में तनाव, भय और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है, जबकि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, रचनात्मक कार्य, आत्म–मूल्यांकन और प्रतिक्रिया आधारित प्रणाली छात्रों को सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है। सामाजिक संदर्भ में देखें तो आज का छात्र विभिन्न चुनौतियों जैसे सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग, ध्यान भंग, करियर को लेकर अनिश्चितता और सामाजिक अपेक्षाओं के दबाव से घिरा हुआ है, जो उसकी शैक्षिक रुचि को प्रभावित कर सकता है; ऐसे में विद्यालयों को परामर्श सेवाएँ, करियर मार्गदर्शन और जीवन कौशल शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- पटना जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- पटना जिले में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1 पटना जिले के माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2 पटना जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर है।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र पटना जिला है। अध्ययन में पटना जिले के शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा 9 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

न्यादर्श:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर की छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में पटना जिला के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के कुल 20 माध्यमिक विद्यालयों में से न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर किया गया है। प्रत्येक चयनित विद्यालयों में से कक्षा 9वीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है। इस प्रकार कुल 600 छात्र–छात्राओं का चयन न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि:** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

- **साख्यिकीय विधि:** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाये। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: " पटना जिले के माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 1: पटना जिले के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		300	300
मध्यमान (M)		51.80	43.80
मानक विचलन (SD)		23.59	21.32
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		4.36	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

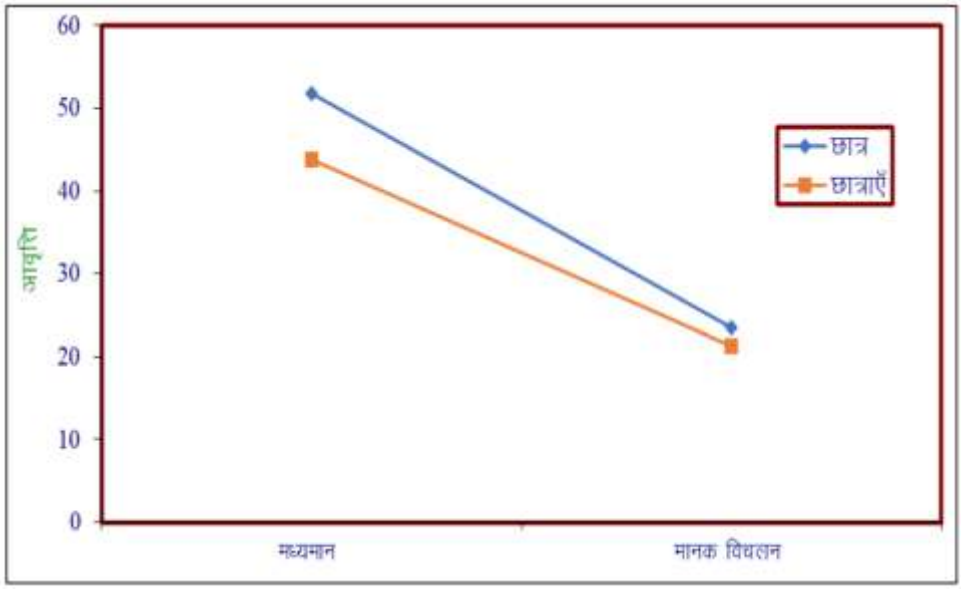

आरेख क्र. 1: पटना जिले के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 51.80 तथा 43.80 तथा मानक विचलन क्रमशः 23.59 तथा 21.32 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 4.36 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1. 96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहो ं में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि के दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर देखने को मिलता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना के असंगत है। अतः परिकल्पना निरसित होती है।

परिकल्पना 2: " पटना जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर है।"

तालिका 2: पटना जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी अंचल के विद्यार्थी	ग्रामीण अंचल के विद्यार्थी
समूह की संख्या (N)		300	300
मध्यमान (M)		51.63	45.60
मानक विचलन (SD)		22.93	21.92
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.29	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

Vol 8, Issue 3, 2025 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2025.8.3.8145

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

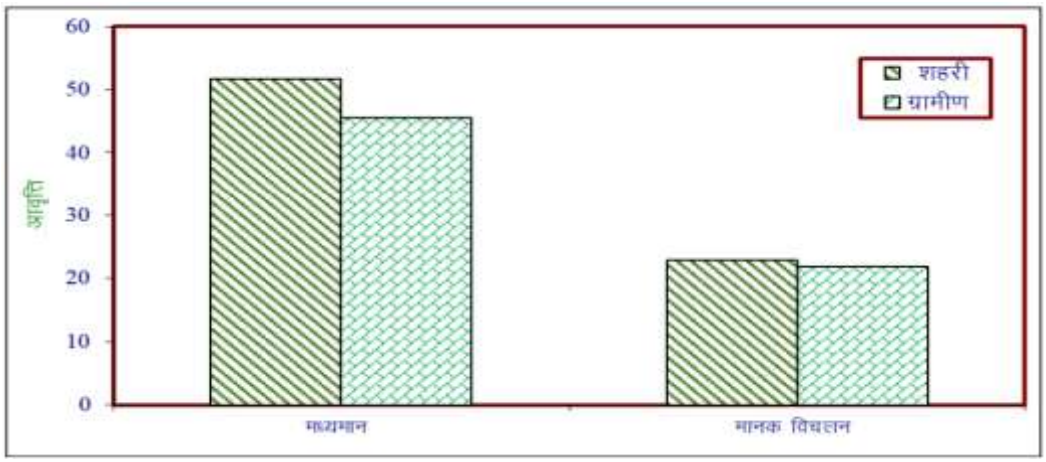

आरेख 2: पटना जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 51.63 तथा 45.60 तथा मानक विचलन क्रमशः 22.93 तथा 21.92 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 3.29 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2. 58 से अधिक है। अतः शैक्षिक रुचि के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि के मध्यमान में भी सार्थक अन्तर पाया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि सार्थक अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

पटना जिले में विद्यालय का शैक्षिक एवं घरेलू वातावरण छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रुचि को प्रभावित करती है। निम्नस्तरीय रुचि वाले छात्र–छात्राऐं अपने अध्ययन की दिशा में असामान्य रुप से अनियमित होते हैं। बच्चों को उचित मार्गदर्शन मिलने से शैक्षिक रुचि एवं योग्यता में वृद्धि होती हैं। उच्च रुचि धारक छात्र–छात्राऐं सत्र के प्रारंभ से ही अध्ययन में रुचि रखते हुए परीक्षा की तैयारी में लगे रहते हैं। इसी प्रकार शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में भी देखने को मिलता है। निष्कर्षतः पटना जिले के माध्यमिक स्तर पर छात्र व छात्राओं के शैक्षिक रुचि में अन्तर है। इसी प्रकार शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- रामआश्रय शर्मा, (2018). माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक रुचि का अध्ययन। भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 12(2), 45–52।
- जगदीश चंद्र अग्रवाल, (2017). किशोरावस्था में सीखने की रुचि और प्रेरणा। शिक्षा और समाज, 9(1), 23–30।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

- लक्ष्मीकांत मिश्रा, (2019). विद्यालयी वातावरण और छात्र अभिरुचि का संबंध। शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 14(3), 61–70।
- नरेश कुमार बुटोला, (2018). माध्यमिक स्तर पर छात्रों की शैक्षिक समस्याएँ। आधुनिक शिक्षा समीक्षा, 11(2), 34–41।
- रामशकल पाण्डेय, (2016). शिक्षण विधियों का छात्र रुचि पर प्रभाव। भारतीय शिक्षा विमर्श, 8(1), 55–62।
- गिरिजा शंकर त्रिपाठी, (2020). तकनीकी शिक्षण और शैक्षिक रुचि। शिक्षा तकनीक पत्रिका, 15(4), 72–80।
- नरेन्द्र देव सक्सेना, (2017). माध्यमिक शिक्षा में प्रेरणा के स्रोत। राष्ट्रीय शैक्षिक अध्ययन, 10(2), 19–27।
- उषा श्रीवास्तव, (2019). किशोर छात्रों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ। बाल एवं किशोर अध्ययन, 13(1), 40–48।
- सुरेश कुमार, (2018). शैक्षिक रुचि और शैक्षणिक उपलब्धि का सहसंबंध। भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 16(3), 66–74।
- धर्मवीर सिंहयादव, (2021). मूल्यांकन प्रणाली और छात्र रुचि। समकालीन शिक्षा शोध, 18(2), 28–36।
- सुधा रानी वर्मा, (2020). सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और शैक्षिक रुचि। शिक्षा विकास जर्नल, 14(2), 50–58।
- हरि शंकर सिंह, (2019). माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का सर्वांगीण विकास। राष्ट्रीय शिक्षा पत्रिका, 17(1), 12–20।